International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-08-2023, Accepted: 10-09-2023, Published: 27-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 36-37

नागार्जुन और प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री चिंतन

जयविर वशिष्ठ
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा, गुजरात, भारत

सारांश
स्त्री ईश्वर की अद्भुत सृष्टि है। स्त्री शान्ती, शक्ति, शील सौन्दर्य की मूर्ति है। स्त्री सशक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है और यही सशक्तिकरण उपन्यासों के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियाँ हैं, उनका सामना भी बड़े धैर्य के साथ कर रही है। अपनी पहचान शक्ति और सत्ता को जानने की कोशिश करते हुए स्त्री जागरण की बात उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती है। उपन्यास समाज के साथ चलनेवाली साहित्यिक विधा है। साहित्यक विधा में स्त्री को सही रूप में जानने पहचानने की कोशिश की गई है। प्रेमचन्द और नागार्जुन के सभी उपन्यासों में प्रायः स्त्रियों का यथार्थ रूप प्रकट हुआ है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, दहेज–प्रथा, अनमेल विवाह, बहुपत्नी विवाह, विधवा विवाह, नारी शिक्षा, अछूत समस्या, वेश्या समस्या, स्वतंत्र यौन संबंध, आदि सभी विसंगतियों पर चर्चा कर इनका निवारण करने का प्रयत्न किया है।

मूल शब्दः सृष्टि, सशक्तिकरण, समाज, विधा, यथार्थ, निवारण

भूमिका
किसी भी देश का महत्व एवं वहाँ की उपलब्धि, व्यक्ति के द्वारा ही संभव है। व्यक्ति है तभी विकास और उन्नति है। किसी भी देश के समाज में परिवर्तन का श्रेय स्त्री और पुरूष दोनों का बराबर होता है अर्थात दोनों की समान सहभागिता से ही विकास संभव है। हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचन्द का आगमन एक नये मोड़ का सूचक है। उसमें न तो नीति और उपदेश के अनेकानेक उद्धरण होते हैं और न तिलिस्म के जादुई खण्डहर और वातावरण। प्रेमचन्द ने ख्याली दुनिया में मस्त हिन्दी के पाठकों को यथार्थ से परिचय कराया।
नागार्जुन ने भी प्रेमचन्द की ही यथार्थवादी जनवादी कथा परम्परा को आत्मसात करके उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यह कहा जा सकता है कि नागार्जुन के साहित्य में विचारात्मक विसंगतियाँ और अन्तर्विरोध है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री चिंतन
उपन्यास समाज का दर्पण होता है क्योंकि उसमें तात्कालीन समाज का, युग की परिस्थितियों तथा जनजीवन का चित्रण होता है। उपन्यास अपने एक क्लेवर में मानव जीवन की सम्पूर्णता तथा समग्रता को हर दृष्टि से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। वह मानव मन की गहराईयों से मस्तिष्क की प्रत्येक परत के धरातल पर होने वाली क्रियाओं को भी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है। भारतीय समाज रिश्तों और परिवार को महत्व देनेवाला समाज है। स्त्री रिश्तों की धुरी है। वह परिवार की जननी, पोषक एवं संरक्षक है, परन्तु यह एक सच्चाई है कि भारतीय समाज में नारी विभिन्न स्थितियों एवं कालों में किसी न किसी रूप में शोषित होती आई हैं और पितृसतात्मक समाज में उसे सदैव दोयम दर्जा ही मिला है। आज नारी पहले की तुलना में अधिक सजग, सचेत और सक्रिय हुई है और अपने शोषण से मुक्ति के लिए एवं अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए आन्दोलनकारी भूमिका में आ गई है। प्रेमचन्द और नागार्जुन के उपन्यासों में नारी के जिन रूपों की अभिव्यक्ति हुई है, उन्हें इस विमर्श में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।
हिन्दी के कथा सम्राट प्रेमचन्द ने स्त्रियों की जीवन परिस्थितियों में निहित अन्याय को उभार कर रखा और वैश्यावृत्ति, बेमेल विवाह, दहेज–प्रथा के विरूद्ध तथा स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के पक्ष में लिख कर स्त्रियों पर सामंती व्यवस्था की पाशविक जकड़ को ढीला करने तथा उनके व्यापक जनान्दोलनों से जुड़ने की दिशा में काम किया। प्रेमचन्द ने सामंती शोषण की शिकार, औरतों की कथाओं को बार–बार उठाया है तथा उस जीवन यथार्थ को बराबर उठाया, जिसमें स्त्रियाँ लगातार पिस रही हैं।
'सेवासदन' उपन्यास में प्रेमचन्द ने नारी जीवन से संबद्ध यथार्थ को नारी हित की दृष्टि से पहली बार उठाया एवं नारी को सामाजिक एवं आर्थिक दासता से मुक्त करने की कामना की। वेश्यावृत्ति की समस्या पर प्रेमचन्द की भावनाएँ कोमल रही है। उनकी अवधारणा रही है, इस तरह की महिलाएँ समाज द्वारा ठुकराई हुई होती है। बेहतर जिन्दगी का मौका मिले तो वेश्यावृत्ति उनकी पसन्द हरगिज नहीं होगी। 'सेवासदन' में जिन हालात के चलते सुमन अपने आपको वेश्यावृत्ति में झोंक देती है, उसके बारे में बैंक के बाबू और समाज सुधारक विट्ठल दास से स्वयं सुमन वेश्यावृत्ति अपनाने के वजह पर कहती हैः– "मैं जानती हूँ कि मैने अत्यन्त निकृष्ट कर्म किया है, लेकिन मैं विवश थी। इसके सिवाय मेरे लिए कोई रास्ता न था।'' आगे वह कहती हैः– "मेरे मन में नित्य यही चिन्ता रहती थी कि आदर कैसे मिले।'' यहाँ प्रेमचन्द उन तथ्यों को उजागर करते हैं कि निम्न से निम्न कार्य में संलग्न व्यक्ति भी मान चाहता है, सम्मान चाहता है और आदर चाहता है।
प्रेमचन्द ने विधवा समस्या को अपने साहित्य में बार–बार उभारा है। यह समाज का शाश्वत प्रश्न है जो हर वर्ग के स्त्री के सम्मुख उपस्थित है। 'गबन' में विधवा रतन से कहती है "न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था कि पति के मरते ही हिन्दू नारी इस प्रकार स्वत्व – वंचिता हो जाती है।" वैधव्य के कई उदाहरण उनके उपन्यास में है, जैसे– 'वरदान' में वृजरानी वैधव्य का शिकार होते हुए प्रताप के प्रेम में पड़कर भी विवाह नहीं कर सकती। कमलचरण की अकाल मृत्यु पर वृजरानी के दुःख का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं– "सौभाग्यवती स्त्री के लिए उसका पति संसार की सबसे प्यारी वस्तु होती है, वह उसी के लिए जीती है और उसी के लिए मरती है। उसका हंसना बोलना, उसी को पसंद करने के लिए और उसका बनाव श्रृंगार उसी को लुभाने के लिए होता है। उसका सुहाग उसका जीवन है और सुहाग उठ जाना जीवन का अंत है"
'गोदान' प्रेमचन्द का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसे कृषि संस्कृति का महाकाव्य की संज्ञा दी गई है। इसमें प्रेमचन्द समाज के मुख्य अन्तर्विरोध के परिप्रेक्ष्य में स्त्रियों की समस्या को उठाते हैं। इसमें

धनिया जैसी संघर्षशील सिलिया जैसी स्वाभीमानी मालती जैसी विवाह संस्था का विरोध करनेवाली स्वतंत्रचेता पात्रों की रचना कर अस्तित्व की छाप छोड़नेवाली जुझाः महिलाओं के पक्ष में खड़े होते हैं। 'गोदान' में गोविन्दी आदर्श पत्नी का उत्कृष्टतम उदाहरण है एवं पुरूष वर्ग द्वारा नारी से अपेक्षा का चरमोत्कर्ष हम डा० मेहता के वक्तव्य में देखते हैं। डा० मेहता कहते हैं "संसार में जो कुछ सुन्दर है उसी की प्रतिमा को मैं स्त्री कहता हूँ, मैं उससे यह आशा रखता हूँ कि मैं उसे मार ही डालूँ तो प्रतिहिंसा का भाव उसमें न आए, अगर मैं उसके आँखों के सामने किसी स्त्री को प्यार भी करूँ तो भी उसकी ईर्ष्या ना जागे।" 'गोदान' की स्त्रियों का परिस्थिति से समझौते करना एवं हर हाल में संतुष्टि बनाये रखना, इनके जीवन का आधार होता है। जो उपन्यास के अन्तिम दृश्य में लेखक साक्षात सच्चाई प्रस्तुत कर देते हैं– "महाराज ना घर में गाय हैं. ना बछिया, ना पैसा, यही पैसे हैं यही इनका गोदान और पछाड़ खाकर गिर पड़ती है।''

'कायाकल्प' में नायक की स्त्री पूछती है– "नारी के लिए पुरूष सेवा से बढ़कर विलास भोग एवं श्रृंगार नहीं है, परन्तु कौन कह सकता है कि नारी का यह त्याग, उसका यह सेवा भाव ही, क्या उसके अपमान का कारण नहीं हो रहा है?" 'मंगलसूत्र' में प्रेमचन्द नारी के आश्रिता और उसके विरोध के मुद्दे को दर्शाते हैं। संत कुमार अपनी पत्नी पुष्पा से कहते है– "जो स्त्री पुरूष पर अवलंबित है उसे पुरुष की हुकूमत माननी पड़ेगी।" पत्नी पुष्पा का उत्तर हमें तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति और उसका विरोध ब्यान करता है– "अगर तुम्हारी आश्रिता हूँ तो तुम भी मेरे आश्रित हो, मैं तुम्हारे घर में जितना काम करती हूँ उतना ही काम दूसरों के घर करूँ तो अपना निर्वाह कर सकती हूँ या नहीं, बोलो? तब मैं जो कमाऊँगी वो मेरा होगा। यहाँ मैं चाहे प्राण भी दे दूँ पर मेरा किसी चीज पर अधिकार नहीं तुम जब चाहो मुझे घर से निकाल सकते हो।'' यह दुःखद चित्रण है कि आर्थिक निर्भरता ने स्त्रियों को गुलामी की जिन्दगी जीने पर मजबूर कर दिया है।

नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री चिंतन

प्रेमचन्द के समान नागार्जुन भी बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे, उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य सृजन में लगा दिया। उन्होंने उपन्यास, कविता, कहानी, संस्मरण, निबंध आदि साहित्यिक विधाओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया। प्रेमचन्द के निधन (1936 ई0) के बाद दस–ग्यारह वर्षों तक किसी भी उपन्यासकार ने ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर उपन्यास नहीं लिखा। विनय कुमार पाठक के शब्दों में "नागार्जुन स्वतंत्र भारत के प्रथम उपन्यासकार हैं जिन्होंने प्रेमचन्द की औपन्यासिक परम्परा को नये आयाम देकर आगे बढ़ाया।" प्रेमचन्द की भाँति नागार्जुन ने भी नारी चेतना एवं विमर्श के प्रति अपने दृष्टिकोण प्रकट किये हैं, परंतु प्रेमचन्द में जहाँ संवेदना की अधिकता है वहीं नागार्जुन में चेतना की। इसलिए नागार्जुन के उपन्यसों की स्त्रियाँ अपनी भिन्न अस्मिता एवं पहचान बनाती हैं।

नागार्जुन के बहुचर्चित उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' (1948) में ग्रामीण जीवन के आधार पर एक उच्चकुलीन विधवा के माध्यम से, भारतीय नारी के दुर्भाग्य की कहानी कही गई है, इसमें विधवा नारी के साथ–साथ सधवा नारी की दुरावस्था का भी चित्रण हुआ है। गौरी रतिनाथ की चाची और उपन्यास की नायिका है। रूप सुन्दरी गौरी का विवाह दरिद्र और रोगी वैद्यनाथ से हुआ परन्तु बेटे उमानाथ और बेटी प्रतिभामा को जन्म देकर ही विधवा हो गई। रतिनाथ गौरी के विधुर देवर जयनाथ का बेटा है। गौरी के इच्छा के विरूद्ध जब देवर से गर्भ ठहर जाता है और जब गौरी का पुत्र उसे तिरस्कार करने लगता है तो रतिनाथ ही चाची के लिए जीने का सहारा बना रतिनाथ चाची के विषय में कहता है– "व्रतसंयमी आत्मनिर्भर चाची ने अपना जीवन तापसी की तरह बिताया बेटे उमानाथ से तो इतना तिरस्कार पाया कि वह माँ के अंतिम संस्कार के लिए भी नहीं आया।'' उपन्यास के अंत तक आते–आते चाची के सारे दोषों और कलंक का परिमार्जन हो जाता है। गौरी की आँखों में छलकते वात्सल्य के तरल रूप को देखकर रतिनाथ का चेहरा खिल जाता है। रतिनाथ द्वारा चाची के प्रति कहे गये ये शब्द "ऐसा लगता है कि दिन व दिन तुम देवता होती चली जा रही हो'' चाची के चरित्र में निहित उदात्तता की ही अभिव्यक्ति है। 'उग्रतारा' में नर्मदेश्वर की भाभी तेज ओज की प्रतिमा है। इस नारी के अंतरंग हृदय में सामाजिक व्यभिचार की शिकार हुई उगनी के प्रति उनका कितना सद्भाव है, यह उनके इस कथन से स्पष्ट हो जाता है दृ "लुचे लफंगे अपना ही मुँह काला करते हैं। हमारा तुम्हारा मुँह तो शीशे से भी ज्यादा साफ रहेगा।" नागार्जुन के ये नारी पात्र उदात्त एवं उच्च भावनाओं से ओत प्रोत है।

'कुम्भीपाक' उपन्यास में नागार्जुन ने यह दिखाया है कि नारी की दयनीय दशा के पीछे अन्ततः पुरूष ही जिम्मेवार है। इसमें प्रगतिशील नारी चरित्रों के संदर्भ में उन्होंने तथ्य की पुष्टि इस प्रकार की है– "कॉलेजों मे पढ़–लिखकर लड़कियाँ निकलती हैं, पुराने समाज के जंगल में खो जाती है...." नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'बलचनमा' में खेती के माध्यम से ग्रामीण नारियों की दुर्दशा का चित्रण किया है। 'नई पौध'–उपन्यास में बेमेल विवाह की समस्या को उठाया है। 'दुःखमोचन' में विधवा समस्या के माध्यम से स्त्री विमर्श को दिखलाया है। 'वरूण के बेटे' में मधुओं के जीवन संघर्ष और जागरण की कहानी कही गई है।

प्रेमचन्द और नागार्जुन की अभिव्यक्ति में समानता और असमानता दोनों है। समानता यह है कि दोनों ग्रामीण जीवन के कुशल चितेरे हैं और असमानता यह है कि प्रेमचन्द जहाँ ग्रामीण परिवेश से बाहर निकल कर शहरी परिवेश में आते जाते हैं. वहीं नागार्जुन ग्राम–अंचल की सीमाओं का यदा–कदा ही अतिक्रमण करते हैं। दूसरी बात यह है कि प्रेमचन्द पर गाँधीवाद का प्रभाव था, जबकि नागार्जुन मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे। नारी के प्रति दोनों की संवेदनाएँ एक जैसी थीं और दानों नारी की दुर्दशा के लिए अशिष्टता, अन्धविश्वास, परम्परा, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, आर्थिक पराधीनता और पुरुषों की सामंती मानसिकता को जिम्मेवार मानते थे और दोनों ही स्त्री–पुरुष का स्वप्न देखते थे।

अतः प्रेमचंद और नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में जो स्त्री–विमर्श है, वो अंततः नारी के शोषण मुक्ति एवं उन्नति की कामना ही है। दोनों महान उपन्यासकारों को पता था कि नारी की उन्नति ही समाज एवं देश की उन्नति है। अतः उन्होंने अपने कथा साहित्य में स्त्री–जीवन की समस्याओं, शोषण, समाजिक दासता के पहलुओं आदि को बड़ी आत्मीयता एवं गहराई के साथ अनुभूत किया एवं खुली आँखों से देखा था तथा उस सत्य एवं यथार्थ को बड़ी ईमानदारी से चित्रित कर स्त्री की आजादी एवं विकास के सपने देखे हैं।

संदर्भ सूचि

1. सेवा सदन प्रेमचन्द पृष्ठ–91–92
2. सेवा सदन प्रेमचन्द पृष्ठ–60
3. गबन प्रेमचन्द पृष्ठ–337
4. वरदान प्रेमचन्द पृष्ठ–115
5. गोदान प्रेमचन्द पृष्ठ–189
6. गोदान प्रेमचन्द पृष्ठ–361
7. कायाकल्प प्रेमचन्द पृष्ठ–444
8. मंगलसूत्र प्रेमचन्द पृष्ठ–10
9. मंगलसूत्र प्रेमचन्द पृष्ठ–12
10. प्रेमचन्द और नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना– विनय कुमार पाठक–पृष्ठ–06
11. रतिनाथ की चाची नागार्जुन पृष्ठ–150
12. रतिनाथ की चाची नागार्जुन पृष्ठ 96
13. उग्रतारा नागार्जुन पृष्ठ – 42
14. कुम्भीपाक – नागार्जुन पृष्ठ – 74